मिथिलेश्वर का उपन्यास–तेरा संगी कोई नहीं

मृत्युंजय कुमार सिंह

तेरा संगी कोई नहीं–मिथिलेश्वर का पाँचवा उपन्यास है। यह लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद से 1918 ई0 में प्रकाशित है। एक सौ चौहत्तर पृष्ठों के इस मध्यम का उपन्यास के पिछले आवरण पृष्ठ पर लिखा है–''कृषक जीवन की बुनियादी संरचना के तहत कृषि के निरंतर उपेक्षित, अभावग्रस्त और परेशानी पूर्ण बनते जाने के कारणों का राई रक्स उजागर करता यह उपन्यास कृषक जीवन, कृषक समाज और कृषि समस्या का जीवंत विश्लेषण प्रस्तुत करता है। खेत मजदूरों को ही किसान मानकर उन पर आधारित रचनाओं से पृथक एक मध्यम वर्गीय किसान की त्रासद कथा के माध्यम से इस उपन्यास ने सही अर्थों में प्रतिनिधि कृषक चरित्र तथा कृषि जीवन से संबन्धित वास्तविक समस्याओं को न सिर्फ चिन्हींत किया है, बल्कि उन्हें जानने समझने और एक सही अंजाम तक पहुँचाने के लिए सार्थक जमीन भी मुहैया करायी है।

'तेरा संगी कोई नहीं' कृषक जीवन, कृषक समाज और कृषि से सम्बन्धित समस्याओं की सूक्ष्मता, बेवाकी और जमीनी स्तर पर पड़ताल करने वाला विलक्षण उपन्यास है।